Approaches of organising different pedagogical subjects

विभिन्न शिक्षण विषयों के आयोजन के उपागम

- विषय केंद्रित उपागम (Subject Centred Approach)
- विस्तृत क्षेत्र उपागम (Broad field Area Approach)
- सामाजिक समस्या उपागम (Social problem based Approach
- अध्येता केंद्रित उपागम (Learner Centred A

1. **विषय केन्द्रित उपागम**-विषय केन्द्रित उपागम शैक्षिक अनुभवों के संगठन के लिए अधिकतम प्रयुक्त होने वाले उपागमों में से एक है। इस उपागम में विषयवस्तु के चारों ओर अधिगम अनुभवों को संगठित किया जाता है और शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए विषयवस्तु में प्रवीणता ही। मूल आधार है।

विषय केन्द्रित पाठ्यचर्या में पाठ्यचर्या योजनाकार का मुख्य दायित्व है कि वे विद्यालय द्वारा स्वीकृत विषयों का निर्धारण करें और निर्णय लें कि प्रत्येक विषय-वस्तु के अन्तर्गत क्या-क्या आएगा। उदाहरण के लिए, वे विषय-वस्तु या पाठ्य सामग्री को अध्ययन के विभिन्न क्षेत्रों जैसे- हिन्दी, अंग्रेजी, विज्ञान, सामाजिक ज्ञान, गणित आदि में बाँट लें। पाठ्यचर्या योजना में लगे व्यक्तियों का दूसरा दायित्व यह है कि वे छात्र की विषयगत योग्यता को जाँचने के लिए औपचारिक परीक्षणों,समस्या समाधान स्थितियों आदि द्वारा मूल्यांकन की युक्तियाँ निकाले।

2. **विस्तृत क्षेत्र उपागम-** विस्तार क्षेत्र उपागम पारम्परिक विषय डिजाइन का परिवर्तित रूप है। यह उपागम अध्ययन के सम्पूर्ण क्षेत्र से सम्बद्ध ज्ञान, बोध को एक व्यापक विषय-वस्तु संगठन में लाने का प्रयास करता है विस्तृत क्षेत्र उपागम में समान विषयों की विषय-वस्तु को समाकलित करने का प्रयास किया जाता है। उदाहरण के लिए, जीव विज्ञान का विस्तृत क्षेत्र पाठ्यक्रम विकसित करते समय प्राणी विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, शरीर क्रिया विज्ञान, जीवाणु विज्ञान जैसे विषयों के सिद्धान्तों, अवधारणाओं तथा ज्ञान को एक निर्देशात्मक इकाई में एकत्र किए जाने का प्रयास किया जाना चाहिए।

विस्तृत क्षेत्र उपागम सही अर्थ में पूर्णतः विषय आधारित उपागम है। परन्तु यह एक ऐसा उपागम है जिसमें विषयवस्तु के चयन और संगठन का आधार पारम्परिक विषय केन्द्रित उपागम से भिन्न है। इसमें ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों को सह-सम्बद्ध समाकलित और करने के प्रयास किए जाते हैं।

3. **सामाजिक समस्या उपागम** - इस उपागम के समर्थक यह मानते हैं कि व्यक्ति के अधिगम अनुभव इस संस्कृति और वातावरण के क्रियाकलापों पर आधारित होने चाहिए जिनमें वह रहता है।

इससे विद्यार्थी में सामाजिक मुद्दों और समस्याओं के बारे में जागरूकता आती है और उनको प्रभावी ढंग से सुलझाने की योग्यता उत्पन्न होती है। सामाजिक

समस्या उपागम के माध्यम से पर्यावरण प्रजातिवाद जनसंख्या, संचार तथा तकनीकी जैसे विषयों पर पाठ्यक्रम विकसित किए जा सकते हैं। इस उपागम में सामाजिक समस्या अथवा मुद्दे का विश्लेषण करने के पश्चात् अधिगम उद्देश्यों को निर्धारित किया जाता है, समस्या से सम्बद्ध किसी भी स्रोत से संगत विषय-वस्तु को लिया जा सकता है।

4. **अध्येता केन्द्रित उपागम-** अधिगम एक ऐसी क्रिया है जिसमें हम अनुभवों द्वारा अपने व्यवहार में परिवर्तन करते हैं। हम सबसे ज्यादा उन परिस्थितियों से सीखते हैं जिनसे कि हमें समस्या समाधान में सहायता मिलती है, जिनसे अपनी इच्छाओं की पूर्ति होती है और जिनके द्वारा हम अपनी रुचियों तथा जरूरतों को पूरा करते हैं। पाठ्यचर्या विकास के इस उपागम में विद्यालय अनुभवों द्वारा छात्रों को ऐसी विधियाँ सिखाने का प्रयास किया जाता है जिन्हें एक प्रभावी नागरिक समस्या समाधान तथा अपनी रुचि और जरूरतों को पूरा करने के लिए उपयोग में लाता है। इस प्रकार की पाठ्यचर्या योजना छात्रों के वर्तमान जीवन से जरूरतों पर आधारित होगी।

यह उपागम छात्रों को भविष्य की अपेक्षा वर्तमान का सामना करने के लिए तैयार रहता है। छात्र किसी समस्या को सुलझाने के लिए अपनी बुद्धि तथा पूर्वज्ञान से जुड़े अनुभवों का उपयोग करके सही निर्णय पर पहुँचता है। इसके लिए उचित अधिगम अनुभवों की योजना बनानी होगी जो मनोवैज्ञानिक रूप से सुदृढ़ तथा छात्र के लिए उपयोगी हो। पाठ्यचर्या में विभिन्न विषयों को शामिल करना पड़ेगा यथा, यौनारम्भ में आने वाले शारीरिक तथा भावात्मक बदलावों सम्बन्धी बोध सहपाठियों के साथ अंत क्रिया, वैयक्तिक मूल्यों का विकास आदि। दूसरे शब्दों में पाठ्यचर्या में उन मुद्दों को शामिल करना होगा जो छात्रों की विकासात्मक अवस्थाओं से जुड़े हुए हो।